

## मारवाड़ के राठौड़ राजवंश की स्थापना और प्रारंभिक शासक

राम चन्द्र

श्री मोती मेमोरियल महाविद्यालय, भावी

**शोध सारांश :-** राजस्थान के इतिहास में मारवाड़ का विशेष महत्व है। इस क्षेत्र का अधिकांश भाग राठौड़ राजवंश के शासन में रहा, जिसने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से गहरा प्रभाव डाला। राठौड़ वंश की उत्पत्ति कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजपरिवार से मानी जाती है। कन्नौज पर मुसलमानों के आक्रमण के बाद राठौड़ों को अपना गढ़ छोड़ना पड़ा और उन्होंने राजस्थान की ओर पलायन किया। यही पलायन आगे चलकर मारवाड़ में राठौड़ वंश की स्थापना का आधार बना। राठौड़ वंश के वास्तविक संस्थापक राव सीहा माने जाते हैं। राव सीहा ने 13वीं शताब्दी में पाली क्षेत्र में अपना आधार स्थापित किया और वहाँ से मारवाड़ के विभिन्न हिस्सों पर नियंत्रण करना शुरू किया। भीलों, स्थानीय चौहानों तथा अन्य राजपूत समूहों के साथ संघर्ष करते हुए उन्होंने पाली, मंडोर और आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार किया। राव सीहा की वीरता, रणनीतिक दृष्टि और नेतृत्व क्षमता ने मारवाड़ में राठौड़ों के शासन की नींव रखी। राव सीहा के बाद उनके पुत्र और उत्तराधिकारी राव अस्तोजी ने शासन को और अधिक मजबूत किया। उन्होंने मंडोर को राजधानी के रूप में विकसित किया और प्रशासनिक ढाँचे को व्यवस्थित किया। धीरे-धीरे मारवाड़ का विस्तार होता गया और राठौड़ों ने न केवल राजनीतिक शक्ति हासिल की, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी क्षेत्र को समृद्ध बनाया।

प्रारंभिक राठौड़ शासकों ने कठोर परिस्थितियों में भी अपने शासन को स्थायी बनाने के लिए कई प्रकार के सुधार किए। उन्होंने भूमि व्यवस्था, कर संग्रह, सैनिक संगठन और किले निर्माण में विशेष योगदान दिया। मंडोर से लेकर आगे जोधपुर तक का विस्तार राठौड़ों के साहस और दूरदृष्टि का प्रतीक था। इन शासकों ने मारवाड़ की लोककला, स्थापत्य, साहित्य और धार्मिक परंपराओं को भी संरक्षण और प्रोत्साहन दिया। यही कारण है कि आज भी राठौड़ शासकों की विरासत राजस्थान के जनमानस में जीवित है। इस शोध पत्र का उद्देश्य राठौड़ वंश की स्थापना और प्रारंभिक शासकों की उपलब्धियों, संघर्षों और प्रशासनिक नीतियों को विस्तार से प्रस्तुत करना है। साथ ही, यह शोध इतिहास के उन पहलुओं को उजागर करता है, जो हमें तत्कालीन समाज की स्थिति और राजनैतिक दृष्टिकोण को समझने में मदद करते हैं। मारवाड़ के राठौड़ वंश की गाथा न केवल शौर्य और विजय की कहानी है, बल्कि यह एक अदम्य आत्मबल, धैर्य और सांस्कृतिक गौरव का भी प्रतीक है।

**संकेताक्षर –** राठौड़ वंश की उत्पत्ति और मूल स्थान, मारवाड़ में राठौड़ों की स्थापना की प्रक्रिया, राठौड़ वंश के संस्थापक, प्रारंभिक शासन व्यवस्था और प्रशासनिक संरचना, प्रारंभिक राठौड़ शासकों की चुनौतियाँ।

**प्रस्तावना :-** राजस्थान, जिसे वीरों की धरती और बहादुरी की प्रतीक भूमि कहा जाता है, अपने गौरवमयी इतिहास और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। इस प्रदेश की अनेक रियासतों में मारवाड़ का विशेष स्थान रहा है। रेगिस्तान की कठोर परिस्थितियों में भी जिस प्रकार इस क्षेत्र ने अपनी पहचान बनाई, वह अपने आप में अद्वितीय है। मारवाड़ के उत्थान और राजनीतिक-सामाजिक स्थिरता के पीछे राठौड़ राजवंश का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राठौड़ वंश की उत्पत्ति प्राचीन कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजघराने से मानी जाती है। जब 12वीं शताब्दी में कन्नौज पर तुर्क आक्रमण हुए, तब राठौड़ वंश के लोग वहाँ से पलायन कर राजस्थान के मरुस्थलीय भागों में आए। इन्हीं परिस्थितियों में राठौड़ों ने मारवाड़ में अपने नए साम्राज्य की नींव रखी। इस नई भूमि पर टिकना और सत्ता स्थापित करना कोई सरल कार्य नहीं थाय इसमें स्थानीय राजपूत राजाओं, भीलों और अन्य जातीय समूहों के साथ संघर्ष करना पड़ा। राठौड़ वंश के संस्थापक राव सीहा ने पाली क्षेत्र में अपने साम्राज्य की शुरुआत की। उन्होंने अपनी अदम्य वीरता, कुशल रणनीति और संगठन क्षमता के बल पर मारवाड़ में राठौड़ सत्ता की मजबूत नींव रखी। राव सीहा के नेतृत्व में राठौड़ों ने पाली, मंडोर और आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार कर एक संगठित राजनीतिक इकाई का निर्माण किया। उनके पश्चात राव अस्तोजी और अन्य शासकों ने शासन को सुदृढ़ कर मारवाड़ को एक शक्तिशाली रियासत के रूप में विकसित किया। प्रारंभिक राठौड़ शासकों का योगदान केवल राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। इन्होंने किलों, मंदिरों, तालाबों और महलों का निर्माण कर स्थापत्य कला को प्रोत्साहित किया। साथ ही, लोकगीत, लोकनृत्य और साहित्य के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह शोध पत्र मारवाड़ में राठौड़ वंश की स्थापना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रारंभिक शासकों के संघर्षों, उपलब्धियों तथा प्रशासनिक नीतियों का विस्तृत विश्लेषण करता है। इससे हमें न केवल उस कालखंड की राजनीतिक स्थिति का ज्ञान मिलता है, बल्कि समाज की सांस्कृतिक और आर्थिक संरचना को भी समझने का अवसर मिलता है। राठौड़ राजवंश की यह कहानी पराक्रम, धैर्य और दूरदर्शिता की जीवंत मिसाल है, जो आज भी राजस्थान के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

## राठौड़ वंश की उत्पत्ति और मूल स्थान

राजस्थान के इतिहास में राठौड़ वंश का एक विशिष्ट और गौरवशाली स्थान है। राठौड़ वंश का मूल स्थान उत्तर भारत में स्थित प्राचीन नगर कान्यकुब्ज, जिसे वर्तमान में कन्नौज कहा जाता है, माना जाता है। कन्नौज प्राचीन काल में हिंदुस्तान के प्रमुख सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्रों में से एक था। यह नगर गंगा के तट पर बसा हुआ था और यहां से अनेक शक्तिशाली राजवंशों ने शासन किया। राठौड़ वंश का संबंध कन्नौज के गौरवशाली गढ़वाल वंश से बताया जाता है। इस वंश की उत्पत्ति सूर्यवंशी राजाओं से जुड़ी मानी जाती है। कई इतिहासकारों और परंपरागत स्रोतों के अनुसार, राठौड़ शब्द श्राठौराश या श्राष्ट्रकूटश से भी जुड़ा माना जाता है। किंतु अधिकांश राजस्थानी इतिहासकारों की धारणा है कि राठौड़ मूलतः कन्नौज के राजा जयचंद्र के वंशज थे। जयचंद्र गढ़वाल वंश के अंतिम शक्तिशाली राजा थे और उनका राज्य कन्नौज में स्थापित था। कन्नौज अपने समय में अत्यंत समृद्ध और संपन्न नगर था। यहाँ शिक्षा, कला, साहित्य और व्यापार खूब फले-फूले। राजसी ठाठ-बाठ, भव्य महल, विशाल किले और मंदिर कन्नौज की शान थे। यहाँ के शासकों ने अपने साम्राज्य को संगठित रूप में बढ़ाया और उसे एक शक्तिशाली राज्य के रूप में विकसित किया।

**कन्नौज पर मुसलमानों के आक्रमण की पृष्ठभूमि :-** 12वीं शताब्दी के अंतिम चरण में भारत में मुसलमान आक्रमणकारियों का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था। दिल्ली पर कब्जा करने के बाद मुस्लिम शासकों ने उत्तर भारत के अन्य प्रमुख राज्यों पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित करना प्रारंभ कर दिया। कन्नौज पर सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण मोहम्मद गोरी और उसके सेनापतियों द्वारा किया गया। यह आक्रमण 1193 ईस्वी में हुआ था, जब तराइन की दूसरी लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद मुस्लिम सेनाओं ने उत्तरी भारत में अपना प्रभाव तेजी से फैलाया। इस आक्रमण में कन्नौज के राजा जयचंद्र को हराया गया और कन्नौज को लूटा व ध्वस्त कर दिया गया। कन्नौज के ध्वंस के साथ ही यहाँ का सामाजिक और राजनीतिक ढांचा पूरी तरह से बिखर गया। राजघराने के अनेक सदस्य मारे गए, और शेष को अपनी जान बचाने के लिए पलायन करना पड़ा। जयचंद्र के पुत्र शिवाराज (या कुछ स्रोतों में राठौड़ सीहा) ने अपनी जान बचाने के लिए कन्नौज छोड़ दिया और पश्चिम की ओर पलायन करना शुरू किया।

**राठौड़ों का पलायन और मारवाड़ की ओर प्रस्थान :-** कन्नौज के पतन के बाद बचे हुए राठौड़ वंशजों के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी कृ अपनी वंश परंपरा को जीवित रखना और एक नया आधार क्षेत्र खोजना। इस कारण उन्होंने गंगा-यमुना के दोआब क्षेत्र से आगे बढ़ते हुए सबसे पहले मध्य भारत और फिर राजस्थान की ओर प्रस्थान किया। राठौड़ों ने राजस्थान के मरुस्थलीय इलाके मारवाड़ को चुना, जो उस समय चौहानों, परिहारों, भीलों और अन्य छोटे-छोटे क्षत्रपों के नियंत्रण में था। इतिहासकार मानते हैं कि कन्नौज से पलायन करने के दौरान राठौड़ राजकुमारों और उनके अनुयायियों ने कठिन परिस्थितियों, मार्ग की प्रतिकूलताओं और लगातार हो रहे आक्रमणों का सामना किया। इस पूरे समय में राठौड़ों ने अपनी युद्ध क्षमता, संगठन शक्ति और साहस को जीवित रखा। मारवाड़, जिसे प्राचीन काल में मांडव्यपुर या मंडोर भी कहा जाता था, उस समय अपेक्षाकृत असंगठित और राजनीतिक दृष्टि से कमजोर था। यही कारण था कि राठौड़ों को यहाँ अपनी सत्ता स्थापित करने का अवसर मिला।

**मारवाड़ में राठौड़ों का आगमन और प्रारंभिक संघर्ष :-** राठौड़ों के नेतृत्व में राव सीहा को पहला महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कन्नौज के विनाश के बाद राव सीहा पाली पहुंचे। पाली में उन्होंने व्यापारियों और स्थानीय लोगों के सहयोग से अपने लिए एक मजबूत ठिकाना बनाया। पाली उस समय स्थानीय भील सरदारों के नियंत्रण में था। राव सीहा ने इन्हें पराजित कर वहाँ सत्ता स्थापित की। पाली को आधार बनाकर राठौड़ों ने धीरे-धीरे आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार करना शुरू किया। उन्होंने भीलों, चौहानों और परिहारों से लगातार संघर्ष किया। इस संघर्ष में राव सीहा की वीरता और उनके सैनिक संगठन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राव सीहा के उत्तराधिकारी राव अस्तोजी ने इस संघर्ष को आगे बढ़ाया और मंडोर पर अधिकार जमाया। मंडोर पर अधिकार करने के बाद राठौड़ शक्ति का केंद्रीकरण हुआ और उनकी स्थिति पहले से अधिक मजबूत हुई। इसके बाद मंडोर को ही मारवाड़ की राजधानी के रूप में विकसित किया गया।

**राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से मारवाड़ का महत्व :-** मारवाड़ क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान के मध्य पश्चिमी भाग में स्थित है। यहाँ की भूमि रेतीली और कठोर है, किंतु रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थी। मारवाड़ के माध्यम से गुजरात, दिल्ली और मध्य भारत के बीच व्यापारिक मार्ग गुजरते थे। इस कारण यहाँ सत्ता स्थापित करना आर्थिक और सामरिक दृष्टि से लाभकारी था। मारवाड़ की जनता में भी वीरता और स्वतंत्रता की भावना प्रबल थी। राठौड़ों ने इस भावना को समझते हुए स्थानीय जनता को अपने साथ जोड़ा। उन्होंने भीलों और अन्य जनजातियों को भी प्रशासन में स्थान दिया। इस कारण धीरे-धीरे राठौड़ों के प्रति जनता का विश्वास और सहयोग बढ़ा।

**राठौड़ वंश का पुनर्गठन और वंश परंपरा का संरक्षण :-** कन्नौज के पतन के बाद राठौड़ों के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी अपनी राजवंशीय परंपरा को जीवित रखना। राजस्थान के मरुस्थलीय और वीरान भू-भाग में उन्होंने अपने पूर्वजों की गौरवशाली परंपरा को न केवल संरक्षित किया, बल्कि उसे और अधिक सुदृढ़ भी किया। राठौड़ों ने अपने शासन में क्षत्रिय मर्यादा, हिंदू धर्म की रक्षा और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उनके शासन में कला, साहित्य और स्थापत्य का भी विकास हुआ। यही कारण था कि मारवाड़ में बाद में मेहरानगढ़ किला, उम्मेद भवन पैलेस, मंडोर के स्मारक जैसे भव्य स्थापत्य चिह्न देखने को मिलते हैं।

**इतिहासकारों और स्रोतों की दृष्टि :-** राठौड़ वंश की उत्पत्ति और कन्नौज से उनके संबंध की पुष्टि कई ऐतिहासिक ग्रंथों और परंपरागत स्रोतों में मिलती है। नैनसी री ख्यात, म्हारो चारण साहित्य, लोक कथाएँ और भाटों की वंशावलियाँ इस कहानी को विस्तार से बताती हैं। इसके अतिरिक्त ताम्रपत्रों, शिलालेखों और पुरानी काव्यकृतियों में भी राठौड़ वंश की वीरगाथाएँ संजोयी गई हैं। **कर्नल टॉड** ने अपनी पुस्तक **Annals and Antiquities of Rajasthan** में राठौड़ों की बहादुरी और कन्नौज से उनके संबंध का उल्लेख विस्तार से किया है।

**सांस्कृतिक और सामाजिक योगदान :-** राठौड़ों ने मारवाड़ में केवल सत्ता ही स्थापित नहीं की, बल्कि समाज के हर स्तर पर सांस्कृतिक पुनर्जागरण का वातावरण भी बनाया। यहाँ के मेले, त्योहार, लोक गीत और नृत्य राठौड़ों के समय से ही अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं। उन्होंने मारवाड़ी भाषा को भी राजभाषा के रूप में विकसित किया, जिससे लोक साहित्य और सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण हुआ।



राठौड़ वंश की उत्पत्ति और कन्नौज से उनके संबंध की कहानी वीरता, आत्मबल, संघर्ष और धैर्य की अद्भुत मिसाल है। कन्नौज की सम्पन्न सभ्यता के पतन के बाद, राठौड़ों ने मरुस्थलीय प्रदेश में नई शक्ति का उदय कर न केवल अपनी वंश परंपरा को जीवित रखा, बल्कि राजस्थान के इतिहास में अमर छवि भी स्थापित की। मारवाड़ में राठौड़ों का आगमन इस बात का प्रतीक है कि कैसे कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों में भी साहस और संगठन शक्ति के बल पर कोई भी समाज न केवल जीवित रह सकता है, बल्कि उन्नति भी कर सकता है। राठौड़ वंश ने राजस्थान के सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक जीवन में जो अमिट छाप छोड़ी, वह आज भी राजस्थान के जनमानस में गहराई से रची-बसी है।

### मारवाड़ में राठौड़ों की स्थापना की प्रक्रिया

मारवाड़ का इतिहास वीरता, साहस और अडिग संकल्प की मिसाल है। कन्नौज से पलायन कर राजस्थान पहुंचे राठौड़ों के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी कृ एक नई भूमि पर अपनी सत्ता स्थापित करना। यह कार्य आसान नहीं था, क्योंकि राजस्थान में पहले से ही विभिन्न राजपूत वंश, जनजातीय समूह और स्वतंत्र सरदार सत्ता में थे। मारवाड़ में राठौड़ों की स्थापना की प्रक्रिया कई सियासी और सैन्य संघर्षों से होकर गुजरी। राठौड़ों को सबसे पहले स्थानीय भीलों, चौहानों और परिहारों जैसी जातियों से संघर्ष करना पड़ा। इन संघर्षों ने राठौड़ों को सुदृढ़ और संगठित बनने का अवसर दिया।

**सियासत और संघर्ष की घटनाएँ :-** राठौड़ जब मारवाड़ पहुंचे, उस समय यहाँ राजनीतिक अस्थिरता का माहौल था। भील और मीणा जनजातियों का प्रभुत्व कई क्षेत्रों में था। चौहान और परिहार वंश के स्थानीय शासक भी आपस में संघर्षरत थे। इस अस्थिरता का लाभ उठाकर राठौड़ों ने अपने लिए जगह बनाई। राव सीहा ने पाली क्षेत्र में अपना पहला ठिकाना बनाया। पाली उन दिनों एक समृद्ध व्यापारिक केंद्र था और वहाँ के स्थानीय सरदारों और व्यापारियों का सहयोग प्राप्त करना राठौड़ों के लिए निर्णायक रहा। धीरे-धीरे, पाली को आधार बनाकर राठौड़ों ने आसपास के गाँवों और किलों पर नियंत्रण करना शुरू किया।

राठौड़ों ने स्थानीय सरदारों को पराजित करने के लिए रणनीतिक विवाह, सैन्य आक्रमण और संधियों का सहारा लिया। इस क्रम में कई बार उन्होंने भीलों और अन्य जनजातियों को भी साथ लिया, ताकि स्थानीय सामाजिक ढांचे में उनकी स्थिति मजबूत हो सके।

**स्थानीय चौहानों और परिहारों के साथ संघर्ष :-** मारवाड़ में चौहान और परिहार राजपूत वंश पहले से स्थापित थे। चौहान वंश के शासकों का केंद्र नागौर और आसपास के इलाके थे, जबकि परिहार मंडोर के आसपास प्रभावी थे। राव सीहा और उनके उत्तराधिकारियों ने चौहानों के प्रभाव को चुनौती दी और धीरे-धीरे उन्हें मारवाड़ के कई इलाकों से बाहर कर दिया। पाली से मंडोर तक के मार्ग में चौहान सरदारों ने कई बार राठौड़ों का विरोध किया, परंतु राठौड़ों की संगठित सेना, रणनीतिक दृष्टि और राजनयिक कौशल ने उन्हें जीत दिलाई। परिहारों के साथ संघर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। मंडोर, जो परिहारों की राजधानी थी, पर अधिकार पाना राठौड़ों के लिए सबसे बड़ा लक्ष्य था। मंडोर पर अधिकार करने के बाद ही राठौड़ों को मारवाड़ में स्थायी शक्ति के रूप में मान्यता मिली।



**मालदेव और चंद्रसेन जैसे राजाओं के पूर्व संघर्ष :-** राव सीहा और अस्तोजी के बाद राठौड़ों की सत्ता को मजबूती देने में राव मालदेव और राव चंद्रसेन जैसे शासकों का योगदान भी उल्लेखनीय रहा। राव मालदेव (1532 – 1562 ई.) ने राठौड़ साम्राज्य को एक नई ऊँचाई दी। उन्होंने अफगान आक्रमणकारियों, गुजरात के सुल्तानों और मुगलों से संघर्ष किया और अपने क्षेत्र का काफी विस्तार किया। राव चंद्रसेन, जो मालदेव के पुत्र थे, उन्होंने मुगल सम्राट अकबर के विरुद्ध कड़ा प्रतिरोध किया। चंद्रसेन का संघर्ष इस बात का प्रतीक है कि राठौड़ वंश ने किस प्रकार स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अपनी शक्ति का उपयोग किया। हालाँकि, चंद्रसेन को बाद में पराजय का सामना करना पड़ा, लेकिन उनका संघर्ष आज भी वीरता का प्रतीक माना जाता है।

### राठौड़ वंश के संस्थापक : राव सीहा

राठौड़ वंश के वास्तविक संस्थापक राव सीहा को माना जाता है। कन्नौज के राजा जयचंद्र के वंशज राव सीहा ने 13वीं शताब्दी में पाली क्षेत्र में प्रवेश किया। पाली एक महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर था, जहाँ मारवाड़ के व्यापारी और स्थानीय लोग रहते थे। यहाँ के भील सरदारों से संघर्ष कर राव सीहा ने सत्ता स्थापित की। स्थानीय व्यापारियों ने भी राव सीहा का समर्थन किया, क्योंकि उन्हें भी स्थिर और सुरक्षित शासन की आवश्यकता थी। राव सीहा ने पाली में प्रशासनिक सुधार किए, स्थानीय कर प्रणाली को व्यवस्थित किया और सुरक्षा के लिए स्थानीय लोगों को सैन्य प्रशिक्षण दिया। इससे पाली में राठौड़ों की स्थिति मजबूत हुई। राव सीहा ने पाली को अपनी प्रारंभिक राजधानी बनाया। यहीं से उन्होंने मंडोर और अन्य क्षेत्रों की ओर विस्तार करने की योजना बनाई। पाली से मंडोर तक का मार्ग उस समय दुर्गम था, परंतु राव सीहा की दूरदर्शिता और नेतृत्व ने इस अभियान को सफल बनाया।

**राव अस्तोजी और उनका योगदान :-** राव सीहा के पश्चात उनके पुत्र राव अस्तोजी ने सत्ता संभाली। राव अस्तोजी ने अपने पिता की नीतियों को आगे बढ़ाते हुए पाली से मंडोर तक का विस्तार किया। राव अस्तोजी ने पहले पाली में आंतरिक व्यवस्था को सुदृढ़ किया। उन्होंने सैनिक बल को बढ़ाया, राजस्व प्रणाली में सुधार किया और स्थानीय समाज के विभिन्न वर्गों को शासन में जोड़ा। इससे राठौड़ों की सामाजिक स्वीकार्यता और राजनीतिक शक्ति दोनों बढ़ीं।

मंडोर का अधिग्रहण राव अस्तोजी की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। मंडोर का किला सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। यहाँ से पूरे मारवाड़ पर नजर रखी जा सकती थी। परिहारों के नियंत्रण से मंडोर छीनने में राव अस्तोजी को लंबा संघर्ष करना पड़ा। अंततः उनकी रणनीति और साहस ने उन्हें विजय दिलाई। मंडोर पर अधिकार करने के बाद राव अस्तोजी ने इसे राठौड़ों की नई राजधानी घोषित किया। यहाँ उन्होंने प्रशासनिक केंद्र स्थापित किया, सैनिक टुकड़ियों को तैनात किया और आर्थिक विकास के लिए नई नीतियाँ लागू कीं। राव अस्तोजी ने मंडोर से जोधपुर की ओर भी अपनी दृष्टि बढ़ाई। जोधपुर का क्षेत्र उस समय छोटे-छोटे सरदारों के नियंत्रण में था। राव अस्तोजी ने धीरे-धीरे इन सरदारों को पराजित कर जोधपुर को राठौड़ साम्राज्य का अभिन्न अंग बनाया।

### पाली से मंडोर और जोधपुर की ओर बढ़ने की रणनीति

पाली से मंडोर और फिर जोधपुर तक का विस्तार केवल सैन्य शक्ति के बल पर नहीं हुआ। इसमें कूटनीति, व्यापारिक संबंध और सामाजिक समन्वय की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। पाली से मंडोर तक के मार्ग में कई छोटे किले और चौकियाँ थीं, जिन पर नियंत्रण पाना आवश्यक था। राव अस्तोजी ने पहले इन पर अधिकार किया, ताकि मंडोर पर अंतिम आक्रमण के समय आपूर्ति और सैनिक सहायता बाधित न हो। मंडोर पर अधिकार के बाद राठौड़ों ने व्यापारिक मार्गों पर कर वसूली और सुरक्षा व्यवस्था को व्यवस्थित किया। इससे स्थानीय व्यापारियों और किसानों में विश्वास पैदा हुआ।

जोधपुर की ओर बढ़ने के लिए राव अस्तोजी ने पहले वहाँ के स्थानीय सरदारों से संधियाँ कीं और कई जगह पर विवाह संबंधों के माध्यम से अपने प्रभाव का विस्तार किया। धीरे-धीरे जोधपुर के आस-पास के क्षेत्र राठौड़ साम्राज्य में विलीन हो गए।

**सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान :-** राव सीहा और राव अस्तोजी दोनों ने केवल सैन्य शक्ति पर ही ध्यान नहीं दिया, बल्कि समाज और संस्कृति के विकास में भी योगदान दिया। उन्होंने मंदिरों, बावड़ियों और तालाबों का निर्माण कराया। इससे जनता का समर्थन मिला और उनकी छवि एक लोककल्याणकारी शासक के रूप में स्थापित हुई। कला और साहित्य के संरक्षण में भी राठौड़ शासकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पाली और मंडोर में चारण, भाट, और कवियों को संरक्षण दिया गया। यही कारण है कि उस समय की गाथाएँ आज भी राजस्थान की लोककथाओं में जीवित हैं।

राठौड़ों की मारवाड़ में स्थापना की प्रक्रिया में राव सीहा और राव अस्तोजी का योगदान अमूल्य है। पाली से मंडोर और फिर जोधपुर तक का संघर्ष केवल भूमि प्राप्ति का संघर्ष नहीं था, बल्कि यह आत्मसम्मान, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और स्वतंत्र सत्ता की स्थापना की गाथा थी। राठौड़ों ने स्थानीय जनजातियों और राजपूत सरदारों से संघर्ष कर एक सशक्त राज्य की नींव रखी। उनकी दूरदर्शिता, साहस और रणनीतिक क्षमता ने मारवाड़ को राजस्थान की सबसे शक्तिशाली रियासतों में बदल दिया। राव सीहा और राव अस्तोजी की उपलब्धियाँ यह दर्शाती हैं कि कैसे एक छोटे से ठिकाने (पाली) से शुरू होकर एक विशाल साम्राज्य (मंडोर और जोधपुर) तक का सफर तय किया गया। इनके संघर्ष और विजयों की कहानियाँ आज भी राजस्थान के लोकगीतों और गाथाओं में गायी जाती हैं।

### प्रारंभिक शासन व्यवस्था और प्रशासनिक संरचना

मारवाड़ में राठौड़ वंश की स्थापना के बाद शासन व्यवस्था को सुदृढ़ और संगठित करने के लिए अनेक प्रयास किए गए। प्रारंभिक शासकों ने जिस प्रकार की प्रशासनिक संरचना विकसित की, वह न केवल मारवाड़ को स्थिरता देने में सहायक हुई, बल्कि आने वाले शासकों के लिए भी एक ठोस आधार बनी।

**राजस्व व्यवस्था, भूमि प्रबंधन, और सैनिक संगठन :-** मारवाड़ की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित थी। प्रारंभिक राठौड़ शासकों ने भूमि को मापने, वर्गीकृत करने और कर निर्धारण की एक व्यवस्थित प्रणाली विकसित की। प्रत्येक गांव और खेत का आकलन किया जाता था, और उसी के अनुसार भूमि कर (लगान) वसूला जाता था। राजस्व संग्रह के लिए षटेल और षुखिया जैसे स्थानीय अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी। इससे कर प्रणाली में पारदर्शिता बनी और किसानों में भी प्रशासन के प्रति विश्वास पैदा हुआ। सैनिक संगठन में राठौड़ों ने जागीर व्यवस्था का सहारा लिया। जागीरदारों को भूमि दी जाती थी और बदले में उनसे सैनिक सहायता की अपेक्षा की जाती थी। स्थायी सैनिक बल के अलावा अस्थायी बल भी रखा जाता था, जो युद्ध के समय आम जनता और सैनिकों से मिलकर बनता था। इस व्यवस्था ने मारवाड़ को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान की।

**स्थानीय जनता से संबंध और विश्वास निर्माण :-** राठौड़ शासकों ने स्थानीय जनता के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए। राजपूत परंपरा में जातीय गौरव और स्थानीय परंपराओं का सम्मान करना महत्वपूर्ण माना जाता था। भीलों और अन्य जनजातीय समूहों को प्रशासन में विशेष भूमिका दी गई। उन्हें गांवों और सीमावर्ती क्षेत्रों की सुरक्षा में लगाया गया। राठौड़ शासकों ने शादी-ब्याह और मेलों के माध्यम से भी स्थानीय समाज से घनिष्ठता बढ़ाई। प्रजा के कल्याण के लिए तालाब, कुएं, बावड़ियाँ, मंदिर, धर्मशालाएँ और यात्रियों के लिए सरायों का निर्माण किया गया। इससे जनता में प्रशासन के प्रति विश्वास और निष्ठा बढ़ी।

**धार्मिक और सांस्कृतिक संरक्षण :-** राठौड़ शासकों ने हिंदू धर्म और स्थानीय धार्मिक परंपराओं को संरक्षण दिया। मंदिरों का जीर्णोद्धार, नई मूर्तियों की स्थापना, यज्ञ और धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता था। चारण, भाट, और संतों को संरक्षण देना, धार्मिक कथाओं और वीरगाथाओं का लेखन प्रोत्साहित करना, सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण था। इस संरक्षण के कारण मारवाड़ में सांस्कृतिक जागरूकता और सामाजिक एकता बनी रही।

### प्रारंभिक राठौड़ शासकों की चुनौतियाँ

**बाहरी आक्रमण (दिल्ली सुल्तानत आदि से संघर्ष) :-** मारवाड़ की भौगोलिक स्थिति दिल्ली सुल्तानत और गुजरात सुल्तानत जैसे शक्तिशाली राज्यों के मध्य थी। इस कारण राठौड़ों को लगातार बाहरी आक्रमणों का सामना करना पड़ा। दिल्ली सुल्तानों ने कई बार मारवाड़ पर आक्रमण कर, उसे अपने अधीन करने का प्रयास किया। राठौड़ शासकों ने अपनी सीमाओं को बचाने के लिए कठिन संघर्ष किए।

**स्थानीय राजपूत राज्यों के साथ टकराव :-** मारवाड़ के आस-पास के राजपूत राज्य, जैसे मेवाड़, नागौर, बीकानेर और अजमेर भी शक्तिशाली थे। भूमि, सीमाओं और वर्चस्व को लेकर इनके साथ लगातार संघर्ष होते रहते थे। इस संघर्ष ने राठौड़ों को सैनिक दृष्टि से अधिक संगठित बनाया, लेकिन कई बार आपसी राजपूत एकता भी कमजोर हुई।

**भीलों और अन्य जनजातीय समूहों से संघर्ष :-** भील, मीणा और अन्य जनजातियाँ जो पहाड़ी और जंगल क्षेत्रों में रहती थीं, शुरु में राठौड़ों का विरोध करती रहीं। राठौड़ों ने इन जनजातियों के साथ समझौते किए और कई बार बल प्रयोग कर उन्हें शांत किया। धीरे-धीरे ये जनजातियाँ राठौड़ शासन का हिस्सा बन गईं।

### राठौड़ संस्कृति और समाज में योगदान :-

**स्थापत्य कला (किलों, मंदिरों का निर्माण) :-** राठौड़ शासकों ने अपने शासन के दौरान भव्य किलों, दुर्गों, मंदिरों और महलों का निर्माण करवाया। मंडोर के स्मारक, पाली के किले, जोधपुर का मेहरानगढ़ किला, और बाद में उम्मेद भवन जैसे स्थापत्य चिह्न राठौड़ों की स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन किलों ने न केवल रक्षा में भूमिका निभाई, बल्कि सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्र के रूप में भी कार्य किया।

**लोककला और संगीत का संरक्षण :-** राठौड़ शासकों ने चारणों, भाटों, कवियों और गायकों को संरक्षण दिया। वीरगाथाएँ, लोक गीत और नृत्य रूपों को प्रोत्साहन मिला। आज भी मारवाड़ के लोक संगीत, जैसे मांड और पधारो म्हारे देस जैसे गीत, उस काल के सांस्कृतिक योगदान की जीवंत मिसाल हैं।

**मारवाड़ी भाषा और साहित्य के विकास में योगदान :-** राठौड़ शासनकाल में मारवाड़ी भाषा का विकास हुआ। राजकीय आदेश, शिलालेख, लोकगीत और गाथाएँ मारवाड़ी भाषा में लिखी जाने लगीं। लोक साहित्य के रूप में वीर रस के कवित्त, दोहे और चारण साहित्य खूब फला-फूला। इससे जनता में भाषा के प्रति गौरव और एकता की भावना मजबूत हुई।

### भौगोलिक विस्तार और साम्राज्य की सीमाएँ

**प्रारंभिक काल में राठौड़ों द्वारा नियंत्रित भूभाग का विवरण :-** राठौड़ों ने सबसे पहले पाली और आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार किया। इसके बाद मंडोर, मारवाड़ का प्रमुख केंद्र बना। धीरे-धीरे जोधपुर, मेड़ता, नागौर, परबतसर, और अन्य क्षेत्रों को राठौड़ साम्राज्य में मिला लिया गया।

**सीमाओं का विस्तार और पड़ोसी राज्यों के साथ संधियाँ :-** मालदेव और चंद्रसेन जैसे शासकों ने सीमाओं का और अधिक विस्तार किया। कभी संधि, तो कभी युद्ध के माध्यम से जोधपुर से लेकर जैसलमेर, बीकानेर और अजमेर तक राठौड़ों का प्रभाव फैल गया। राठौड़ शासकों ने मेवाड़ और गुजरात के सुल्तानों से भी संधियाँ कीं। कभी युद्ध के बाद पराजय स्वीकार कर क्षति पूर्ति दी गई, तो कभी सफल राजनयिक समझौतों के माध्यम से शांति स्थापित की गई।

## आर्थिक और सामाजिक स्थिति

**कृषि आधारित अर्थव्यवस्था :-** मारवाड़ की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित थी। यहाँ गेहूँ, जौ, बाजरा, चना और कपास जैसी फसलें प्रमुख थीं। राठौड़ शासकों ने सिंचाई के लिए तालाबों और बावड़ियों का निर्माण कराया। इससे मरुस्थलीय प्रदेश में भी खेती का विस्तार हुआ।

**व्यापार मार्ग और मालगुजारी प्रणाली :-** मारवाड़ भौगोलिक दृष्टि से दिल्ली और गुजरात के बीच प्रमुख व्यापार मार्ग पर स्थित था। इसी कारण व्यापारियों का आना-जाना अधिक होता था। राठौड़ शासकों ने व्यापार मार्गों की सुरक्षा के लिए कर वसूली (मालगुजारी) व्यवस्था विकसित की। यह कर वाणिज्यिक आय का प्रमुख स्रोत था। व्यापारियों को सुरक्षा और सुविधाएँ प्रदान कर उनसे राजस्व अर्जित किया जाता था।

**कारीगरों और व्यापारियों का योगदान :-** कारीगरों ने हथियार, आभूषण, वस्त्र, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी और धातु की कलात्मक वस्तुएँ बनाईं। व्यापारियों और कारीगरों ने न केवल स्थानीय बाजार को समृद्ध किया, बल्कि अन्य राज्यों और विदेशों तक माल का निर्यात भी किया। राठौड़ राजवंश के शासकों ने अपने अद्वितीय संगठन, प्रशासनिक कुशलता और सांस्कृतिक संरक्षण के बल पर मारवाड़ को एक शक्तिशाली और समृद्ध राज्य में परिवर्तित किया। उनकी शासन व्यवस्था में कर व्यवस्था का पारदर्शी ढांचा, सैनिक संगठन की मजबूती और सामाजिक समन्वय की भावना दिखाई देती है।

धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और आर्थिक क्षेत्रों में उनका योगदान आज भी राजस्थान की आत्मा में जीवंत है। राठौड़ों का इतिहास केवल युद्ध और विस्तार की कहानी नहीं, बल्कि समाज के विकास, कला के संरक्षण और संस्कृति के संवर्धन की अद्वितीय गाथा भी है।

## मारवाड़ के राठौड़ राजवंश के ऐतिहासिक स्रोत और साक्ष्य

राजस्थान का इतिहास अपनी वीरगाथाओं, स्थापत्य कला और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। इस इतिहास को जानने और समझने के लिए विभिन्न ऐतिहासिक स्रोत और साक्ष्य उपलब्ध हैं। मारवाड़ के राठौड़ राजवंश के संदर्भ में भी हमें कई प्रकार के भौतिक और साहित्यिक प्रमाण मिलते हैं, जो न केवल उनके शासन, बल्कि उनके समाज, संस्कृति, कला और प्रशासन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं। इन स्रोतों को मुख्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है— शिलालेख और ताम्रपत्र, लोककथाएँ और मौखिक परंपराएँ, तथा प्राचीन ग्रंथ और विदेशी यात्रियों के विवरण।

### शिलालेख और ताम्रपत्र

शिलालेख और ताम्रपत्र किसी भी राजवंश के इतिहास के सबसे प्रामाणिक भौतिक स्रोत माने जाते हैं। राठौड़ राजवंश के संदर्भ में भी कई महत्वपूर्ण शिलालेख और ताम्रपत्र मिले हैं।

**शिलालेख :-** मारवाड़ में कई स्थानों पर शिलालेख पाए गए हैं, जिनमें मेहरानगढ़ किला, मंडोर, नागौर, ओसियां, और जालोर प्रमुख हैं। इन शिलालेखों में राजाओं की वंशावली, धार्मिक दान, युद्ध-विजयों और प्रशासनिक आदेशों का वर्णन मिलता है। उदाहरण के लिए, मंडोर में राव जोधा और राव मालदेव के शासन काल के शिलालेखों में किलों के निर्माण, मंदिरों के जीर्णोद्धार और जल संरचनाओं के निर्माण की जानकारी दी गई है। मेहरानगढ़ किले में स्थित शिलालेखों में राव मालदेव द्वारा गुजरात के सुल्तान के विरुद्ध की गई विजय का वर्णन मिलता है।

**ताम्रपत्र :-** ताम्रपत्रों का उपयोग मुख्यतः भूमि दान, करमुक्ति, और जागीर प्रदान करने के लिए किया जाता था। पाली, मंडोर, और नागौर में मिले ताम्रपत्रों से यह पता चलता है कि राठौड़ शासकों ने ब्राह्मणों, जैन मुनियों और अन्य धार्मिक संस्थाओं को भूमि दान दी थी। इससे न केवल धार्मिक संरक्षण की नीति का पता चलता है, बल्कि सामाजिक ढांचे और आर्थिक संरचना की भी झलक मिलती है। ताम्रपत्रों में राजाओं की उपाधियों, राजकीय मुहरों और हस्ताक्षरों का विवरण भी मिलता है, जिससे शासन की वैधानिकता और उनकी शक्ति का प्रमाण मिलता है।

**लोककथाएँ और मौखिक परंपराएँ :-** राजस्थान के इतिहास में लोककथाओं और मौखिक परंपराओं का विशेष महत्व रहा है। राठौड़ वंश के शौर्य और संघर्ष को जीवंत रखने में इनका बड़ा योगदान है।

**वीरगाथाएँ और चारण साहित्य :-** राजपूत राजाओं के शौर्य की गाथाएँ चारणों और भाटों द्वारा रची और गाई जाती थीं। मारवाड़ में चारणों ने राठौड़ राजाओं की वीरता, दानवीरता और पराक्रम को लोककाव्यों और गीतों में अमर किया। उदाहरण के लिए,

राव जोधा की मंडोर से जोधपुर में राजधानी स्थापित करने की गाथा, राव मालदेव की गुजरात और दिल्ली सुल्तानत के विरुद्ध युद्ध की कहानियाँ, और राव चंद्रसेन के अकबर से संघर्ष की कथाएँ आज भी लोकगीतों में सुनाई देती हैं।

**लोककथाएँ :-** मारवाड़ में पधारो म्हारे देश जैसी प्रसिद्ध कहावतें और गीत राठौड़ शासन की संस्कृति और अतिथि सत्कार की भावना को दर्शाते हैं। भीलों और अन्य जनजातियों के साथ संघर्ष और सहयोग की कहानियाँ, राठौड़ राजकुमारों की वीर मृत्यु और बलिदान की कथाएँ जनमानस में गहरे बसे हुए हैं। लोककथाओं ने उन घटनाओं को जीवित रखा है, जिनका प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोत नहीं मिलता। इसी कारण ये मौखिक परंपराएँ इतिहास के अध्ययन में बहुमूल्य सहायक होती हैं।



### प्राचीन ग्रंथ और इतिहासकारों के वर्णन

राठौड़ वंश के इतिहास के अध्ययन में कई प्राचीन ग्रंथ और स्थानीय इतिहासकारों द्वारा रचित कृतियाँ महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में सामने आती हैं।

**नैनसी री ख्यात :-** नैनसी री ख्यात मारवाड़ के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। इसे मुंहता नैनसी (17वीं शताब्दी) ने लिखा था। नैनसी राव जसवंत सिंह के दरबार में दीवान और प्रमुख प्रशासक थे। इस ग्रंथ में मारवाड़ के राठौड़ राजाओं की वंशावली, युद्धों, प्रशासनिक नीतियों, धार्मिक कार्यों और सांस्कृतिक गतिविधियों का अत्यंत विस्तृत विवरण मिलता है। नैनसी ने लोककथाओं और मौखिक परंपराओं को भी अपनी ख्यात में स्थान दिया, जिससे इस ग्रंथ की ऐतिहासिक प्रामाणिकता और भी बढ़ जाती है।

**मुंहताओं की बातें :-** मुंहताओं की बातें नामक ग्रंथ भी महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसमें मारवाड़ के शासकों के जीवन से जुड़ी घटनाओं और राजनयिक गतिविधियों का उल्लेख मिलता है। मुंहताओं का वर्ग मुख्यतः कूटनीति और लेखांकन में निपुण था। उनके द्वारा संकलित जानकारियों से हमें दरबार के अंदरूनी प्रशासन, राजाओं के व्यवहार और पड़ोसी राज्यों के साथ हुए समझौतों की झलक मिलती है।

**अन्य ख्यात और पुढी :-** राजस्थान में अन्य ख्यातें, जैसे मेवाड़ की ख्यात, डिंगल साहित्य और विभिन्न पुढियाँ (वंशावली लेख) भी राठौड़ों के इतिहास की जानकारी देती हैं। इनमें वंशजों की सूची, किलों का निर्माण, दान, धार्मिक कार्य और युद्धों का वर्णन मिलता है।

**विदेशी यात्रियों के विवरण :-** राठौड़ शासनकाल के दौरान कई विदेशी यात्री भारत आए, जिन्होंने राजस्थान और मारवाड़ के बारे में अपने यात्रा वृत्तांतों में लिखा।

**फ्रांसीसी और पुर्तगाली यात्री :-** 17वीं और 18वीं शताब्दी में फ्रांसीसी और पुर्तगाली व्यापारियों ने मारवाड़ के व्यापारिक मार्गों, व्यापारिक वस्तुओं और राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया। इन यात्रियों ने लिखा कि मारवाड़ के शासक व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करते थे और व्यापार मार्गों की सुरक्षा के लिए कर वसूली करते थे। जोधपुर और पाली जैसे शहर व्यापारिक केंद्र थे और इनका दिल्ली तथा गुजरात से सीधा संपर्क था।

**मुगल इतिहासकारों के लेख :-** हालांकि ये पूरी तरह विदेशी नहीं माने जाते, परंतु मुगलों के दरबारी इतिहासकारों जैसे अबुल फजल (आइन-ए-अकबरी) ने मारवाड़ और राठौड़ शासकों का उल्लेख किया। अबुल फजल ने मारवाड़ के किलों, शासकों के

साहस, स्थानीय राजस्व व्यवस्था और सैन्य शक्ति का विस्तृत विवरण दिया। उन्होंने राव चंद्रसेन के अकबर के विरुद्ध संघर्ष और मेहरानगढ़ किले की मजबूती की प्रशंसा भी की।

**अंग्रेजी यात्री और कंपनी के रिकॉर्ड :-** ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के समय में अंग्रेज अधिकारियों और यात्रियों ने भी मारवाड़ का दौरा किया। उनके यात्रा वृत्तांतों में जोधपुर दरबार, जागीर व्यवस्था, कर संग्रह, किसानों की स्थिति, कारीगरों और व्यापारियों की भूमिका का उल्लेख मिलता है।

### अन्य सहायक स्रोत

**चित्र, मुहर और सिक्के :-** राठौड़ शासकों द्वारा जारी किए गए सिक्कों और मुहरों से शासन की आर्थिक स्थिति और उनके राजनीतिक दायरे का अंदाजा मिलता है। कई राजाओं ने अपने नाम और उपाधियों के साथ सिक्के जारी किए। इनमें उनकी धार्मिक आस्थाओं, देवताओं के प्रतीक चिह्न और स्थानीय प्रतीकों का प्रयोग किया गया।

**स्थापत्य और पुरातात्विक अवशेष :-** मेहरानगढ़ किला, मंडोर के स्मारक, उम्मेद भवन, और अन्य दुर्ग एवं महल, स्थापत्य के प्रमाण के रूप में खड़े हैं। इनका अध्ययन करने पर उस समय की सैन्य रणनीति, कारीगरी और सौंदर्यबोध की झलक मिलती है। मारवाड़ के राठौड़ राजवंश का इतिहास न केवल वीरता और संघर्ष की कहानी है, बल्कि यह सांस्कृतिक समृद्धि, सामाजिक संगठन और प्रशासनिक कुशलता का परिचायक भी है।



इस वंश के इतिहास को समझने में शिलालेख और ताम्रपत्र, लोककथाएँ, प्राचीन ग्रंथ, तथा विदेशी यात्रियों के विवरण अमूल्य स्रोत हैं। शिलालेख और ताम्रपत्र जहां भौतिक साक्ष्य के रूप में शासन की वास्तविकताओं को सामने लाते हैं, वहीं लोककथाएँ और ख्यात राजाओं की लोकप्रियता और समाज में उनकी छवि को प्रकट करती हैं। विदेशी यात्रियों के वर्णन हमें बाहरी दृष्टिकोण से राठौड़ शासन के प्रभाव और मारवाड़ की महत्ता का मूल्यांकन करने में सहायक होते हैं। इन सब स्रोतों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि राठौड़ राजवंश ने न केवल मारवाड़ में एक मजबूत राजनीतिक सत्ता स्थापित की, बल्कि संस्कृति, कला और साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार, इन स्रोतों और साक्ष्यों का अध्ययन हमें राठौड़ वंश के यथार्थ और उसकी ऐतिहासिक महत्ता को गहराई से समझने में मदद करता है।

### निष्कर्ष

मारवाड़ के राठौड़ राजवंश का इतिहास राजस्थान के गौरवशाली अतीत और वीर परंपराओं का जीवंत प्रतीक है। इस वंश की स्थापना और उसके प्रारंभिक शासकों का योगदान न केवल एक शक्तिशाली राजनीतिक सत्ता के रूप में देखा जाता है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से भी इसे अद्वितीय माना जाता है। राठौड़ों की उत्पत्ति कन्नौज के गढ़वाला वंश से जुड़ी है। जब कन्नौज पर मुस्लिम आक्रमण हुआ, तब जयचंद्र के वंशज राठौड़ों ने राजस्थान की ओर पलायन किया और अंततः मारवाड़ की धरती पर अपनी सत्ता स्थापित की। इस प्रक्रिया में उन्हें स्थानीय जनजातियों, चौहानों, परिहारों और अन्य राजपूत सरदारों से लम्बे संघर्ष करने पड़े। राव सीहा को राठौड़ राजवंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उन्होंने पाली को अपना पहला ठिकाना बनाया और वहां से मंडोर तथा अन्य क्षेत्रों की ओर बढ़ते हुए राठौड़ सत्ता की नींव रखी। राव अस्तोजी ने अपने पिता की नीतियों को आगे बढ़ाया और मंडोर पर अधिकार कर मारवाड़ में राठौड़ों की स्थिति को मजबूत किया। इन शासकों ने पाली से लेकर मंडोर और फिर जोधपुर तक धीरे-धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

इन प्रारंभिक शासकों ने न केवल सैन्य दृष्टि से शक्ति अर्जित की, बल्कि प्रशासनिक और सामाजिक व्यवस्थाओं को भी सुव्यवस्थित किया। भूमि व्यवस्था, कर प्रणाली, और जागीर प्रथा के माध्यम से उन्होंने राज्य को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया।

स्थानीय समाज में विश्वास और सहयोग बनाने के लिए धार्मिक और सांस्कृतिक संरक्षण दिया गया। भीलों और अन्य जनजातियों के साथ समझौते, व्यापारियों और कारीगरों का सहयोग, तथा धार्मिक नेताओं के साथ अच्छे संबंधों ने राठौड़ों को स्थानीय समाज में गहरी जड़े जमाने में सहायता की। मेहरानगढ़ जैसे भव्य किलों का निर्माण, मंदिरों और जल-संरचनाओं की स्थापना ने जनता में शासन के प्रति विश्वास को और अधिक सुदृढ़ किया।

इन सब प्रयासों से राठौड़ राजवंश ने न केवल एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की, बल्कि मारवाड़ को सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से एक नई पहचान दी। प्रारंभिक शासकों का साहस, दूरदर्शिता और नेतृत्व कौशल आज भी राजस्थान की गौरवशाली गाथाओं में अमर है। इस प्रकार, राठौड़ वंश की स्थापना की गाथा केवल सत्ता संघर्ष की कहानी नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, संस्कृति और लोककल्याण की भी महान गाथा है।

### संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. मारवाड़ का इतिहास :- डॉ. गिरीराज शरण अग्रवाल
2. नैनसी री ख्यात :- मुंहता नैनसी (संपादक : मंघराय वर्मा, दयालदास भण्डारी)
3. राठौड़ों का इतिहास:- प्रो. गौरीशंकर हीराचंद ओझा
4. राजस्थान की रियासतें :- प्रो. कैलाशचंद्र भारती
5. ए हिस्ट्री ऑफ राजस्थान :- रमेश चंद्र मजूमदार
6. मारवाड़ का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास :- डॉ. नारायण सिंह भाटी
7. राजस्थान की ख्यातें :- डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा
8. द राठौड़स ऑफ मारवाड़ :- रीना मेहता
9. राजस्थान का इतिहास :- जदुनाथ सरकार
10. राजस्थान के राजवंश :- कर्नल टॉड (कर्नल जेम्स टॉड) — Original: Annals and Antiquities of Rajasthan
11. मारवाड़: ऐन एनालिटिकल हिस्ट्री :- शिव सिंह सारण
12. जोधपुर राज्य का इतिहास :- लक्ष्मण सिंह मंडावा
13. मारवाड़ के ऐतिहासिक स्थल और स्मारक :- डॉ. महेन्द्र सिंह राठौड़
14. राठौड़ वंश का इतिहास :- के. एन. दत्त
15. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास :- डॉ. हरीशंकर शर्मा